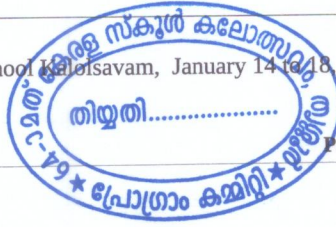




Item Code: 958



Participant Code: 045

मिट्टी की पुकार।

विज्ञान की आसमान में तैरते हैं,
मानव का अनोखा सोचें।
प्रगति की सागर में लहरते हैं,
मनुष्य का अद्भुत कारवाँयाँ।
लेकिन मिट्टी के भीतर रहते हैं,
मानविकता की असली जड़ियाँ।

दैशनी की इलाकों में झूलते हैं,
मनु की सगात्मक सृष्टियाँ।
आधुनिकता की पढ़ाई में नाचते हैं,
लोगों की रोचक आदरशों।
लेकिन ज़मीन की अंदर बढ़ती हैं,
मानविकता की निर्मल नदियाँ।

पुशनी ज़मान की अंदर से,
सामाजिक रुठियाँ की अधकार से,
आती है नया मानव
नया ज़मान की शैली में।



പലതീ है नया मनुष्य
विजय की सुन्दरी रास्ते में।

दुःखों की सिलसिला लादकर,
ढाँडती है मानव, छाड़े जैसे।
सामाजिक समस्याओं की इमारतें वादकर
आगे बढ़ती है मानव, मछली जैसे।
लेकिन, कहाँ है वह सुंदर वातावरण ?
कहाँ है वह साफ जलाशयों ?

कहाँ है वह सच्चाई की फूलों ?
कहाँ है वह प्यार की पेड़ों ?
कहाँ गया वह मेहनत का अंते ?
कहाँ गया वह सहानुभूति का पौधे ?
कहाँ गया वह प्रकृति माता ?
कहाँ है वह मिट्टी की जादू ?

मेहनत की पसीने से
बढ़ते विश्वास की सुंदरता,
थके-मांके रातों से



Item Code: 958



Participant Code: 045

समते खुशी की खुबसूरती,
लाल-लाल खून की बूँदें
से जीते आज़ादी की उंचाई,।

कहाँ गई ? कहाँ गई ?
यह मानविकता की दृशकतें।
कहाँ गई ? कहाँ गई ?
यह मानव का असली जीतें।
मिट्टी की जादू कहाँ गई,
संसार की खुशी कहाँ गई।

काला बनी ताल-तालबों,
मलिन बनी जीव वायु,
सुखा बनी जिंदगी की अमृत।
मिट्टी अपनी सतानों को
रोते रोते पूछते हैं,
“माता की दृढ्य में तलवार मत डालो”।

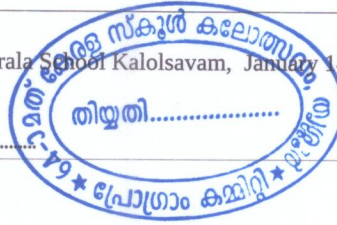
प्रकृति पूछते हैं
इन सब का अर्थ क्या है

प्रकृति कहती है
मिट्टी से ही तुम जन्म लिया,
वह मिट्टी को भी तुम मृत्यु दिया।
लेकिन मानव अभी भी

मिट्टी हमारी पहला मैदान
मिट्टी हमारी पहला विद्यालय
मिट्टी हमारी पहला खिलौना
मिट्टी से हम सफर शुरू करती
और मिट्टी में भी हम वापस आऊँगाँ।
लेकिन मानव अभी भी।

अेत में आनगादेकर, गुठलियाँ वोकर
बालकों जैसे पानी लेकर
छोटी बालिका जैसे परिचालन करते
हमारी पूर्वजों बनाती है
एक सुंदर-कामल परिस्थिति,
एक साफ-सीधे वातावरण।

जब सुन्दरी अेतें दिखाई,



तब उड़ती ही कर्षक की मन में
आनंद की फुलझाड़ियाँ।
जब लते हैं धरती, उसकी मिट्टी की जादु
तब लहरते और नाचते हैं,
मेहनतवालों के मन में शीले तितलियाँ।

मानव की असली खुन है,
मिट्टी की खुशबू।
मानव की सुंदर माँ है,
जमीन की रंग।
मानव की अनोखा भाव है
मिट्टी की अमूल्य सुविधा।

उड़ती है मानव, मिट्टी से
आगे बढ़ती है मानव जमीन पर
लेकिन, इस पल में, उपेक्षा करके
जाते हैं बुलबुला जैसे सुख के पीछे।
माँ को छोड़कर जाते हैं
नैमिषिक सुविधा के पीछे।



मिट्टी पुकारते है कि वापस जाऊँ।
सुंदर अेतों और बागों बनाओ।
प्रकृति के प्रति की कूरता रुको।
और सोचो भविष्य कैलिफ।
दुम्हारी पूर्वजों तुमको लेते
हाक अनोखा दीखन हैं मिट्टी।

मिट्टी की अंत और अनंत पुकार,
हमारी वापसी कैलिफ,
मिट्टी की निरंतर और सार्थक
पुकार, हमारी समझाई कैलिफ।
मिट्टी पुकारते है कि वापस जाऊँ।
मुझे आस्वादन करो और अुशी बनाओ।

मिट्टी पुकारते है कि,
दृश पेड़-पौधे से सजते पहाड़ों बनाओ।
दृवा में नाचते सुनदरी अेतों बनाओ।
मिट्टी पुकारते है कि,
बढ़ती-बढ़ती निर्मल नदियाँ बनाओ।
और ठंडी दृवा को आलिंगन करो।



Item Code: 958

Participant Code: 045



मिट्टी की पुकार,
आज का नया पीढ़ी की ओर है।
आलसी बनी कल की नागरिक के प्रति है।
मिट्टी की पुकार,
जशा से जीवन में नुकसान पड़ा
विवेकरहित युवा पीढ़ी की ओर है।

प्रकृति को धार करने पर
जाह बनने के लिए आओ नया जमान।
मिट्टी में निहित जाह
खोलने की मद्दुस के लिए
आओ नया पीढ़ी।
आओ हम साथ-साथ अद्भुत रच दूँ।

धरती की खुन से सजते गलियाँ,
वर्द से ठिठकना लोगों,
इससे पुकारते मिट्टी
उको इस दयाहीनता
और वापस आओ मिट्टी से।
असली मानव बनो।



डिजिटल युग से आओ,
मिट्टी की गरमी वसंत से।
आओ नया पीढ़ी
मेहनत को मद्दसूस करने कैलिफा।
मिट्टी ही पुकारते हैं,
पुरानी सच्चाई के कैलिफा आओ।

पुरानी लोगों की रास्ता से
मानविकता को समझाने और
पुरानी की मूल्यों को
मिट्टी से जानने कैलिफा
पुकारते मिट्टी
आओ सच्चा मानव बनो
मिट्टी का पुत्र बनो।